17 फरवरी 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 22 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (द्वितीय), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ श्री ऋषभदेव सर्वोदय फाउण्डेशन न्यास द्वारा नये बस स्टेण्ड पर पण्डित चुन्नीलालजी शास्त्री एवं श्रीमती हीराबाई की स्मृति में श्री महेन्द्रकुमार अजितकुमार बंसल परिवार द्वारा प्रदत्त भूमि पर नवनिर्मित तीर्थधाम आदीश्वरम् का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव रविवार, दिनांक 27 जनवरी से शुक्रवार, दिनांक 1 फरवरी 2013 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों के साथ सानन्द संपन्न हुआ। इस अवसर पर नवनिर्मित भव्य जिनमन्दिर में कमलपुष्प की वेदी पर श्री आदिनाथ भगवान की 61 इंची पद्मासन ताम्रवर्णी पाषाण की जिनप्रतिमा के साथ अन्य नौ मनोहारी वेदियों पर नौ जिन प्रतिमाएँ विधिपूर्वक विराजमान की गयी।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में सम्पन्न हुए इस महामहोत्सव में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के पंचकल्याणक सम्बन्धी प्रासंगिक व्याख्यानों का विशेष लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला। इनके अतिरिक्त ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित सतीशचन्दजी पिपरई, पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री प्रतापगढ, ब्र. महेन्द्रकुमारजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा आदि विद्वानों के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि प्रतिष्ठाचार्य पण्डित राजेन्द्रकुमारजी टीकमगढ ने ब्र. महेन्द्रजी इन्दौर, पण्डित कैलाशचंदजी टीकमगढ, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, ब्र. अंकित जैन इन्दौर के सहयोग से तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न करायी गयी। सम्पूर्ण मंच संचालन एवं निर्देशन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

महोत्सव की आरंभवेला में ध्वजारोहण श्री चौधरी विजयकुमार विनयकुमार-प्रमोदकुमारजी बजाज परिवार चन्देरी ने, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री आनन्दजी रोकड़िया परिवार चन्देरी ने एवं प्रतिष्ठामंच का उद्घाटन श्री सुरेशचंद राजीवकुमार सिंगाडा परिवार ने किया।

जन्मकल्याणक के पावन प्रसंग पर बाल तीर्थंकर के प्रथम अभिषेक का सौभाग्य श्री निर्मलकुमारजी अरविन्दजी सर्राफ चन्देरी को एवं प्रथम पालना झूलन का सौभाग्य श्री जिनेन्द्रकुमार महावीर शनिचरा परिवार चन्देरी-बैंगलोर एवं द्वितीय श्रीमती आशा-शांतिकुमारजी पाटील परिवार जयपुर को मिला। राजा श्रेयांस व राजा सोम बनकर आहारदान डॉ. महेन्द्रजी जैन व श्री मुन्नालाल

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

पण्डित रतनचंदजी का अभिनन्दन

जयपुर (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन समाज बापूनगर सम्भाग द्वारा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के 80 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनके निवास पर सादर अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर सम्भाग के पदाधिकारी श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (अध्यक्ष) व डॉ. राजेन्द्रकुमारजी जैन (मंत्री) द्वारा माल्यार्पण कर, शॉल ओढाकर एवं प्रतीक चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया। पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने संभाग की गतिविधियों की प्रशंसा की।

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल प्रतीक चिह्न ग्रहण करते हुए

प्रशिक्षण शिविर की तिथि परिवर्तित

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित होगा। प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु समस्त मुमुक्षु समाज को हार्दिक आमंत्रण है। सभी साधर्मीजन इसी तिथि के अनुसार अपना रिजर्वेशन करवायें।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

सम्पादकीय –

94

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १६७

अब प्रस्तुत गाथा में कहते हैं कि स्व–समय की उपलब्धि न हो पाने का कारण एकमात्र राग है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

जस्स हिदएणुमेत्तं वा परदव्वम्हि विज्जदे रागो।
सो ण विजाणदि समयं सगस्स सव्वागमधरो वि।।१६७।।

(हरिगीत)

अणुमात्र जिसके हृदय में परद्रव्य के प्रति राग है।
हो सर्व आगमधर भले जाने नहीं निजआत्म को।।१६७।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि जिसे परद्रव्य के प्रति अणुमात्र भी, लेशमात्र भी राग हृदय में विद्यमान है, वह भले ही सर्व आगम का पाठी हो, तथापि स्वकीय समय को नहीं जानता, आत्मा का अनुभव नहीं करता।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र समय व्याख्या टीका में कहते हैं कि स्वसमय की उपलब्धि न होने का एकमात्र कारण 'राग' है।

रागरूपी धूल का एक कण भी जिसके हृदय में विद्यमान है, वह भले ही समस्त सिद्धान्त शास्त्रों का पारंगत हो, तथापि निरूपराग अर्थात् शुद्धस्वरूप निर्विकारी स्वरूप को नहीं चेतता, आत्मा के शुद्ध स्वरूप का अनुभव नहीं करता। इसलिए 'धुनकी (यंत्र) से चिपकी हुई रुई' का न्याय लागू होने से अर्थात् जिसप्रकार धुनकी यंत्र से चिपकी हुई थोड़ी सी भी रुई धुनने के कार्य में विघ्न करती है, उसीप्रकार थोड़ा भी राग स्व–समय की प्रसिद्धि के हेतु अर्हतादि की भक्ति विषयक राग भी क्रमशः दूर करने योग्य है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

अणुमात्र पर दरव मैं, राग जास किन होइ।
सो नहिं जानैं सुअ समै, आगम सरब विलोइ।।२३८।।

(सवैया इकतीसा)

जाकै राग रेनु कनी जीवै है हिरदै मांहि,
आपतैं विमुख कछू बाहिर कौं बगै है।
सबही सिद्धान्त–सिन्धु पारगामी यद्यपि है,
तथापि स्वरूप विषै मैल–भाव जगै है।।
तातैं जिन आदि विषै धरमानुराग–कनी,
सुद्धमोखमारग मैं साधक सी लगै है।
मोख कै सधैया तातैं वीतराग जीव कहे,
जग कै वंधैया माहिं राग–दोष पगै है।।२३९।।

(दोहा)

जहाँ राग कनिका रहै, तहाँ न जीव विराम।
वीतराग तातैं मुकत, सकल राग परत्याग।।२४०।।

प्रस्तुत गाथा के सम्पूर्ण कथन का तात्पर्य यह है कि जिसके हृदय में अणुमात्र भी परद्रव्य के प्रति राग है, वह क्षयोपशमज्ञान की विशेषता से समस्त शास्त्रों को पढ़ा हो तो भी जबतक अपने आत्मा के स्वरूप का ज्ञान न हो तब तक वह अज्ञानी ही है।

गाथा – १६८

अब गाथा १६८ में कहते हैं कि समस्त अनर्थ परम्पराओं का मूल रागादि विकल्प हैं, क्योंकि इससे शुभाशुभ कर्मों का संवर नहीं होता।

मूल गाथा इसप्रकार है –

धरिदुं जस्स ण सक्कं चित्तुब्भामं विणा दु अप्पाणं।
रोधो तस्स ण विज्जदि सुहासुहकदस्स कम्मस्स।।१६८।।

(हरिगीत)

चित्त भ्रम से रहित हो निःशंक जो होता नहीं।
हो नहीं सकता उसे संवर अशुभ अर शुभ कर्म का।।१६८।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि जो राग के सद्भाव के कारण अपने चित्त को स्थिर नहीं रख सकता, उसके शुभाशुभ कर्मों का निरोध नहीं है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि यह रागांश मूलक दोष परम्परा का निरूपण है। टीकाकार कहते हैं कि इस लोक में वास्तव में अर्हतादि के ओर की भक्ति भी रागपरिणति के बिना नहीं होती। आत्मज्ञान से शून्य रागादि परिणति होने से आत्मा अपने मन की चंचलता को नहीं रोक सकता और बुद्धिप्रसार अर्थात् मन की चंचलता होने से शुभ या अशुभ कर्म का निरोध नहीं होता। इसलिए अनर्थ संतति का मूल कारण राग ही है।

इसी अभिप्राय को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

जाकै आतमज्ञान बिन, चित की होइ न रोक।
ता आतम कै क्यौं मिटै, पुण्य–पाप की धोक।।२४२।।

(सवैया इकतीसा)

पंच परमेसुर की भगति धरम राग,
तातैं मन का पसार नाना रूप पसरै।
तातैं सुभ–असुभ है करम का परिवार,
आतमीक धरम का सारा रूप खसरै।।
तातैं राग कनिका भी बन्धन का मूल लसै,
मोक्ष का विरोधक है परस रूप भसरै।

मोखरूप साधक कै बाधक है राग-दोष,
जिनराज वानी जानै, राग दोष विसरै।।२४३।।

इसप्रकार उक्त गाथा में, टीका एवं पद्य में यही कहा गया है कि जो व्यक्ति आत्मज्ञान से शून्य राग के सद्‌भाव के कारण चित्त भ्रम से रहित नहीं होता, वह निःशंक नहीं रह सकता। तथा जो निःशंक नहीं होता उसे शुभाशुभ कर्म का संवर नहीं हो सकता। अतः आत्मार्थी को चित्त भ्रम से रहित होना चाहिए।

गाथा – १६९

प्रस्तुत १६९ गाथा में कहते हैं कि रागरूप क्लेश सम्पूर्ण नाश करने योग्य है। मूल गाथा इसप्रकार है –

तम्हा णिव्वुदिकामो णिस्संगो णिम्ममो य हविय पुणो।
सिद्धेस कुणदि भत्तिं णिव्वाणं तेण पप्पोदि।।१६९।।

(हरिगीत)

निःसंग निर्मम हो मुमुक्षु सिद्ध की भक्ति करें।
सिद्धसम निज में रमन कर मुक्ति कन्या को वरे।।१६९।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि इसलिए मोक्षार्थी जीव निःसंग और निर्मम होकर सिद्धों की भक्ति अर्थात् शुद्धात्म द्रव्य में स्थिरता रूप पारमार्थिक सिद्ध भक्ति करता है, इसलिए वह निर्वाण को प्राप्त करता है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि ''रागादि परिणति होने से चित्त भ्रमित होता है। चित्त भ्रमित होने से कर्मबन्ध होता है'' – ऐसा पहले कहा गया है, इसलिए मोक्षार्थी को कर्मबन्ध के मूल कारण चित्त भ्रम को जड़मूल से नष्ट कर देना चाहिए।

यह चित्त भ्रम रागादि परिणति का भी मूलकारण है। चित्तभ्रम का निःशेष नाश किया जाने से जिसे निःसंगता और निर्मोह परिणति की प्राप्ति हुई है, वह जीव शुद्धात्मद्रव्य में विश्रान्तिरूप पारमार्थिक सिद्ध भक्ति धारण करता हुआ स्व-समय की प्रसिद्धिवाला होता है। इसकारण वह जीव कर्मबंध का निःशेष नाश करके सिद्धि को प्राप्त करता है।

कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

तातैं निर्वृत्ति काम कै, ममता संग न कोई।
सिद्ध भगति इक चित करै,निर्वृति पावै सोइ।।२४५।।

(सवैया इकतीसा)

रागादिक वरतना चित्त उद्धांत करै,
चित्त की विकलतामैं नाना कर्म बंधै हैं।
तातैं मोक्ष अरथी कै बंध मूल चित्त भ्रांति,
ताका मूल रागकनी ताका अंत सधै है।।
राग अंत भये सिद्ध-भगति की प्रीति बढ़ी,
निरसंग निर्ममत्व आपरूप खंधै है।
सोई स्वसमय परसिद्ध रिद्धि पूरन है,
सर्व कर्म अन्त करै सिद्धौं कौं निबंधै है।।२४६।।

(दोहा)

तातैं रागकनी कही, रही न नीकी नैक।
निरममत्व निरसंग पद, अलख निरंजन एक।।२४७।।

इसप्रकार इस गाथा में तथा टीका और हिन्दी पद्यों में जो कहा गया है, उसका सार यह है कि मोक्षार्थी जीव, निसंग अर्थात् परिग्रह तथा निर्मत्व अर्थात् ममता रहित होकर सिद्ध भगवान की भक्ति कर सिद्धों के समान ही स्वयं रमण करके मुक्ति प्राप्त करते हैं।

रागादि भावों में प्रवृत्त होने से चित्त चंचल और उद्धत होता है। चित्त की चंचलता या विकलता से नाना कर्मों का बंध होता है। इन कारणों से मोक्षार्थी जीवों के चित्त में भ्रम उत्पन्न होता है, इन सबका मूल राग है।

राग का अन्त होने पर सिद्धगति की प्राप्ति होती है, अतः भव्य जीवों को मोक्ष का पुरुषार्थ ही करने योग्य है। **(क्रमशः)**

प्रथम वार्षिकोत्सव सानंद संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम जिनालय के प्रथम स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 3 फरवरी को श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री आदिनाथ एवं भरत बाहुबली विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में अष्ट देवियों द्वारा नृत्य नाटिका, श्रीमती भावना बाकलीवाल परिवार द्वारा 'नियम का फल' नामक नाटक व श्री दि. जैन महासमिति की वैशाली नगर ईकाई द्वारा जैन नियमों का समावेश करते हुए एक कव्वाली आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। ट्रस्ट द्वारा सभी को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में मंगल कलश विराजमानकर्ता लुहाड़िया परिवार, श्री त्रिलोकचंदजी सोनी, श्री अजितकुमारजी पाटनी परिवार, श्री जितेन्द्रजी सेठी इन्दौर एवं श्री दिनेशजी पाण्डे मुम्बई रहे। विधान का उद्घाटन श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ एवं ध्वजारोहण श्री प्रेमचंदजी जैन (अध्यक्ष-मुमुक्षु मण्डल, अजमेर) ने किया। कार्यक्रम में सैकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

समस्त कार्यक्रमों में श्री वीतराग महिला मण्डल की सदस्याओं श्रीमती अनिता कासलीवाल, अर्चनाजी, इन्द्राजी, रजनीजी, प्रभाजी एवं श्री प्रकाशजी गट्टी, श्री मनोजजी कासलीवाल, श्री निर्मलजी बड़जात्या, श्री मनमोहनजी पाटनी, पत्रकार अंकलेश जैन का विशेष सहयोग रहा।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल ने संपन्न कराये।

फैडरेशन का वार्षिक अधिवेशन संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन परमागम मंदिर जैन स्टोन बहोड़ापुर में दिनांक 15 जनवरी को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ग्रेटर ग्वालियर का वार्षिक अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रात: सम्मेदशिखर विधान के उपरान्त संपन्न अधिवेशन में सर्वप्रथम संस्था के सभी परामर्शदाता विद्वानों, परमसंरक्षकों व अतिथियों का स्वागत किया गया। मंगलाचरण एवं वर्ष 2012 की 'प्रगति प्रतिवेदन रिपोर्ट' के पश्चात् 2013 की कार्ययोजना हेतु पण्डित श्यामलालजी विजयवर्गीय, पण्डित महेशचंदजी ग्वालियर, पण्डित अजितजी 'अचल', पण्डित अशोकजी भाऊ का बाजार, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित अजितजी गोरमी, श्री पुष्पेन्द्रजी जैन भिण्ड आदि ने अपने विचार रखे। 'सर्वोदय अहिंसा अभियान' के नववर्ष कलैण्डर का विमोचन एवं शहर में संचालित पाठशाला के प्रभारियों को सम्मानित किया गया। ग्वालियर शाखा द्वारा 2012 में संचालित गतिविधियाँ निम्नानुसार है –

1. पाठशाला का संचालन, 2. तीर्थयात्रा का आयोजन, 3. शिक्षण शिविर का आयोजन, 4. सर्वोदय अहिंसा अभियान, 5. क्षमावाणी मिलन समारोह, 6. प्रश्नपत्र प्रतियोगिता का आयोजन, 7. सत्साहित्य प्रकाशन, 8. मासिक ज्ञानगोष्ठी का आयोजन।

संचालन प्रदेश संयोजक व ग्वालियर शाखा के निदेशक/महामंत्री पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ने किया। **– सुनील जैन, ग्वालियर**

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

करतारचंदजी जैन (अभिलाषा पेट्रोल पंप) ललितपुरवालों ने दिया।

मूलनायक भगवान श्री आदिनाथ का जिनबिम्ब भेंट व विराजमान करने का सौभाग्य श्री प्रेमचन्दजी–संजय–शैलेन्द्र–सुबोध गुरहा परिवार रायपुर–जयपुर को एवं विधिनायक का श्री महेन्द्रकुमारजी अरुणकुमार बंसल परिवार चन्देरी को मिला। महोत्सव के सौधर्म व शचि इन्द्राणी श्री प्रेमचन्दजी व श्रीमती राजेश गुरहा रहे। जिनमंदिर व वेदी निर्माण में भी आपका महत्वपूर्ण सहयोग रहा है। कुबेर इन्द्र–इन्द्राणी श्री राजकुमारजी–मीना इमलया ललितपुर, महाराजा नाभिराय–मरुदेवी श्री कोमलचंदजी–कुसुम रानीपुर एवं यज्ञनायक–नायिका श्री सुरेशबाबू वकील–स्नेह ललितपुर थे।

साधर्मियों के सात्सल्यभोज हेतु श्री निर्मलजी कठरया एवं श्री अनिल रोकडिया का विशेष सहयोग रहा।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों को प्रासंगिक भक्ति–गीतों से श्री जैन संगीत सरिता छिंदवाड़ा के सहयोग से श्री अनिलजी व दीपकजी धवल भोपाल ने मधुरता प्रदान की। अष्टकुमारिकों के साथ जयपुर की छात्राओं ने कु. परिणति–प्रतीति पाटील के निर्देशन में प्रासंगिक नृत्यों की भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

मंदिर निर्माण में एवं महोत्सव को सफल बनाने में श्री अखिलजी बंसल व समग्र बंसल परिवार का मुख्य योगदान रहा। महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री अमोलकचंदजी कठरया एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ ही सकल दि. जैन समाज, खन्दार सेवा दल एवं महिला मण्डल चन्देरी का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

व्याख्यानों का लाभ मिला

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 12 से 19 जनवरी तक पण्डित अनिलजी जैन इंजी. इन्दौर द्वारा टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों को व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर प्रात:काल पण्डित अनिलजी द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार की 14–15 गाथा पर प्रवचन हुये। महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक उनके प्रवचनों का लाभ लिया। दिनांक 19 जनवरी को पण्डितजी का परिचय टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों को दिया गया। यद्यपि वे अपने निजी कार्य हेतु जयपुर पधारे थे, तथापि उन्होंने विद्यार्थियों को प्रवचनों का लाभ प्रदान किया, एतदर्थ उनका आभार व्यक्त किया गया एवं पुन: आने के लिये आमंत्रित किया गया। पण्डितजी ने भी भविष्य में आकर विद्यार्थियों को अपने प्रवचनों के माध्यम से लाभ प्रदान करने की भावना व्यक्त की।

हार्दिक बधाई

1. बापूनगर–जयपुर (राज.) निवासी **श्री अनुज जैन** पुत्र श्री ताराचन्द जैन ने दिनांक 23 जनवरी को पुत्र एवं पुत्री (युगल) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1100/– रुपये प्रदान किये।

2. जनता कॉलोनी–जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती चन्द्रा जैन के सुपौत्र व अनिल जैन–संध्या जैन के सुपुत्र **चि. चिराग** का विवाह **सौ. अपूर्वा** जैन के साथ दिनांक 24 जनवरी को संपन्न हुआ, इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 250/– रुपये प्राप्त हुये।

3. बम्बई निवासी श्री ब्रजलाल दलीचन्दजी हताया की सुपुत्री **सौ. भाविका जैन** का विवाह श्री सुरेशकुमारजी कोठारी के सुपुत्र **चि. निशांत कोठारी** के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 1100/– रुपये की राशि प्राप्त हुई।

4. ग्रान्टरोड़–मुम्बई निवासी श्री जवेरचन्दजी के सुपुत्र **चि. कमलेश** का शुभ विवाह **सौ. दीपिका जैन** के साथ हुआ। इस अवसर पर 500/– रुपये जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये।

उक्त सभी को जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

नववर्ष स्नेह-मिलन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 25 जनवरी को वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल द्वारा नववर्ष के उपलक्ष्य में एक स्नेह–मिलन का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत श्रीमती सुशीलाजी जैन द्वारा तीर्थक्षेत्रों की वंदना का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सरोजजी कटारिया द्वारा की गई। सभी महिलाओं ने कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

परीक्षा सामग्री शीघ्र भेजें

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) की शीतकालीन परीक्षायें सभी केन्द्रों पर दिनांक 27, 28 और 29 जनवरी 2013 को सम्पन्न हो चुकी है। संबंधित परीक्षा केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र परीक्षा सामग्री भेजें, ताकि परीक्षा परिणाम एवं सर्टिफिकेट जैसे कार्य समय पर सम्पन्न हो सकें।

– ओ.पी. आचार्य (प्रबंधक–परीक्षा विभाग)

अमृत महामहोत्सव सानन्द संपन्न

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ तीर्थधाम मंगलायतन की स्थापना के दस वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ एवं कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 31 जनवरी से 6 फरवरी तक मंगलायतन अमृत महामहोत्सव का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अरुणजी जैन अलवर, पण्डित अरहंतजी झांझरी उज्जैन, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित रतनचंदजी चौधरी कोटा, ब्र. कल्पनाबेन इत्यादि विद्वानों द्वारा प्रवचनों, कक्षाओं एवं गोष्ठियों के माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ।

महोत्सव में 'जैनदर्शन की आराधना और प्रभावना', जैनदर्शन का

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

170 तीर्थंकर मण्डल विधान संपन्न

रतलाम (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय के तत्त्वावधान में दिनांक 9 से 13 जनवरी 2013 तक श्री 170 तीर्थंकर महामण्डल विधान महोत्सव बहुत उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा पूजन के भावार्थ व क्रिया–परिणाम–अभिप्राय विषय पर एवं पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा नय–विवक्षा विषय पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'भरत बाहुबली' नाटक का प्रोजेक्टर पर प्रदर्शन एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा के निर्देशन में 'आदर्श जैन दम्पत्ति' व 'जैनत्व के संस्कार' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में पण्डित अनिलजी पाटोदी बड़नगर, पण्डित पदमकुमारजी अजमेरा एवं श्री जम्बुकुमारजी पाटोदी रतलाम का भी लाभ समाज को प्राप्त हुआ।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अभयजी व पण्डित राजकुमारजी के निर्देशन में पण्डित अनिलजी धवल व श्री दीपकजी धवल द्वारा संपन्न कराये गये।

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

111 छठवां प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आगम–अनुमानादिक द्वारा जो आत्मा जानने में आया; कालान्तर में उसे याद रखकर, उसमें परिणाम मग्न करता है; इसलिए यह स्मृतिरूप परोक्षप्रमाण हुआ।

इस स्मृति प्रमाण में भी वही आगमज्ञान और अनुमान ज्ञान काम आ रहा है; जो पहले कभी किया गया था और धारणा में विद्यमान था। इसलिए यह भी एक प्रकार से आगमज्ञान और अनुमानज्ञान ही है। गुरुमुख से सुनकर प्राप्त हुआ ज्ञान भी आगमज्ञान में शामिल है।

यह स्मृति इसी भव में किये अध्ययन से, श्रवण से उत्पन्न धारणा की भी हो सकती है और विगत भवों में किये गये अध्ययन–श्रवण से उत्पन्न धारणा की भी हो सकती है।

विगत भव में प्राप्त धारणा की स्मृति को जातिस्मरण कहते हैं; पर दोनों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। दोनों स्मृति ही हैं। यदि भेद करना ही हो तो वर्तमान भव में प्राप्त ज्ञान को ही प्रमुखता प्राप्त होगी; पर यह भोला जगत विगत भव की स्मृति से अधिक महिमावंत होता है।

इस स्मृति प्रमाण में भी धारणा में विद्यमान आत्मवस्तुरूप ज्ञेय का स्मरण किया गया है, आत्मा के साक्षात् दर्शन नहीं हुए हैं।

इसप्रकार हम देखते हैं कि **अनुभव में आगम, युक्ति, अनुमान, स्मृति आदि परोक्षप्रमाणों द्वारा ही आत्मा का जानना होता है; इसलिए अनुभव मूलत: तो परोक्षप्रमाण ही है।**

यद्यपि अनुभव ज्ञान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है; यही कारण है कि आचार्य कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र ने आगम के सेवन, युक्ति के अवलम्बन और परम्परा गुरु से प्राप्त आत्मज्ञान को अनुभूति से प्रमाणित करने का आदेश दिया है[१]; तथापि आगम, युक्ति और गुरूपदेश की उपेक्षा उचित नहीं है।

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी तो यहाँ तक कहते हैं कि **स्वानुभव में परोक्षप्रमाण द्वारा ही आत्मा का जानना होता है। वहाँ पहले जानना होता है; पश्चात् जो स्वरूप जाना, उसी में परिणाम मग्न होते हैं, परिणाम मग्न होने पर कुछ विशेष जानपना नहीं होता।**

उक्त कथन में अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में दो बातों को प्रस्तुत किया है। पहली बात तो यह है कि अनुभव मूलत: परोक्षप्रमाण ही है और दूसरी बात यह है कि अनुभव में कुछ विशेष नया ज्ञेय जानने में नहीं आता।

तात्पर्य यह है कि करणलब्धि में प्रवेश के पूर्व जो ज्ञान आगम के सेवन, युक्ति के अवलम्बन और गुरु के उपदेश से प्राप्त हुआ था; आत्मानुभूति में उससे कुछ नया जानना नहीं होता।

इसका स्पष्ट अर्थ यह भी है कि आत्मानुभूति के पहले या बाद में लेखक और प्रवक्ताओं द्वारा जो भी प्रतिपादन होता है; वह सब सर्वज्ञ की वाणी की अनुसार लिखे गये आगमज्ञान के अनुसार ही होता है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि आत्महित में अनुभव की और जिनवाणी की सुरक्षा में आगमज्ञान की मुख्यता है। तात्पर्य यह है कि आत्महित के लिए आगम, अनुमान और परम्परागुरु के उपदेश से प्राप्त ज्ञान को अनुभव से प्रमाणित करना चाहिए; परन्तु अनुभवजन्य ज्ञान को भी जगत के समक्ष प्रस्तुत करते समय आगम के आधार पर सप्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए, प्रबल युक्तियों से उसका समर्थन करना चाहिए, उपयुक्त उदाहरणों के माध्यम से वस्तुस्वरूप को स्पष्ट करना चाहिए। यही राजमार्ग है।

स्वयं के अनुभव को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करना सहज स्वीकृति के लिए उपयुक्त नहीं है।

आचार्य पूज्यपाद सर्वार्थसिद्धि में कहते हैं कि वस्तुस्वरूप का निर्णय आगम और युक्ति से होता है।[१] शास्त्रों का अध्ययन और ज्ञानी धर्मात्माओं से श्रवण – ये दोनों ही बातें आगम में आ जाती हैं और प्रमाण और नय युक्ति में आ जाते हैं; तर्क और अनुमान भी युक्ति में समाहित हो जाते हैं।

अध्ययन और श्रवण में मूलभूत अन्तर यह है कि **ज्ञानियों से तत्त्व श्रवण उतना सुलभ नहीं है कि जितना शास्त्रों के अध्ययन से तत्त्व को समझना है; क्योंकि शास्त्र हमें सभी जगह सहज सुलभ हैं।**

यदि हम अपने घर में रात को २ बजे पढ़ना चाहते हैं तो पढ़ सकते हैं; पर ज्ञानी गुरु चाहे जहाँ, चाहे जब उपलब्ध नहीं हो सकते। वे तो एक सुनिश्चित समय पर, सुनिश्चित स्थान पर ही उपलब्ध हो सकते हैं। यही कारण है कि प्रवचनसार में जिनवाणी को नित्यबोधक कहा है।

गुरुजी के समझाते समय यदि तुम्हारा उपयोग भ्रष्ट हो गया या तुम देर से पहुँचे तो फिर तुम्हें वह बात दुबारा सुनने को मिलना सहज नहीं है; पर शास्त्रों को बार–बार पढ़ने की सुविधा सभी को सहज उपलब्ध है। प्रात: पढ़ो, सायं को पढ़ो, दिन में पढ़ो, रात में पढ़ो, जब चाहो तब पढ़ो; मंदिर में पढ़ो, घर पर पढ़ो, रेल में पढ़ो, बस में पढ़ो, हवाई जहाज में पढ़ो; जहाँ चाहो, वहाँ पढ़ो।

इतना सबकुछ होने पर भी जिनवाणी की बात इकतरफी बात है, वनवे ट्रेफिक है। शास्त्रों को आप पढ़ तो सकते हैं, पर उनसे प्रश्न नहीं कर सकते, कुछ पूछ नहीं सकते; पर ज्ञानी गुरुओं से विनयपूर्वक प्रश्न करना संभव है, पूछना संभव है।

तथा ज्ञानी गुरु सबकुछ जबान से ही तो नहीं कहते, अपनी आँखों से भी बहुत कुछ कहते हैं; उनके चेहरे के हावभावों से भी बहुत कुछ स्पष्ट होता है; उनके जीवन से भी हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

---

१. सर्वार्थसिद्धि : अध्याय ९, सूत्र १९ की टीका

यह बात शास्त्रों के अध्ययन में नहीं मिलेगी; पर **शास्त्रों ने क्षेत्र व काल की दूरी समाप्त कर दी है। हम हजारों वर्ष पहले हुए आचार्यों की बात समझ सकते हैं; हजारों मील दूर बैठे ज्ञानी गुरुओं को भी पढ़ सकते हैं, पर यदि ज्ञानी पुरुषों से कुछ सुनना-समझना है, प्रश्न करना है तो हमें भी वहीं होना चाहिए, जहाँ वे हैं; उसी समय उपस्थित होना चाहिए, जब वे समझा रहे हों। श्रवण को क्षेत्र और काल की दूरी बरदाश्त नहीं है।**

वस्तुत: बात यह है कि अध्ययन और श्रवण – ये दोनों एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी नहीं, पूरक हैं।

इसलिए हमें अध्ययन और श्रवण – दोनों का लाभ लेना चाहिए। दोनों में से किसी की भी उपेक्षा उचित नहीं है।

अत: ऐसी बातें करना समझदारी का काम नहीं है कि जब हमें सद्‌गुरु का समागम उपलब्ध है तो हम अध्ययन के चक्कर में क्यों पड़े अथवा जब शास्त्रों में सबकुछ है तो फिर गुरुओं के समागम का आग्रह क्यों रखें ?

जिसप्रकार लोक में किसी भी विषय के विशेषज्ञ बनने की चाह रखनेवाले छात्र गुरुओं से अध्ययन के लिए महाविद्यालय में पढ़ने भी जाते हैं और संबंधित पुस्तकों का गहराई से अध्ययन भी करते हैं।

उसीप्रकार आत्मोपलब्धि की भावनावाले आत्मार्थी भाई-बहिनों को आत्मस्वरूप के निरूपक शास्त्रों का गहरा अध्ययन भी करना चाहिए और उसके मर्म को ज्ञानी गुरुओं के मुख से भी सुनना चाहिए।

ज्ञानी गुरुओं से आवश्यक प्रश्नोत्तर भी करना चाहिए, अध्ययन-श्रवण में उठने वाली शंकाओं का समाधान भी प्राप्त करना चाहिए।

अध्ययन और श्रवण के बाद चिन्तन की बात आती है; अध्ययन और श्रवण तो आगम के सेवन में आते हैं और **युक्ति के अवलम्बन में चिन्तन-मनन की मुख्यता होती है, तर्क-वितर्क की बात होती है, व्याप्ति ज्ञानपूर्वक अनुमान की बात होती है।**

इसप्रकार आगम और युक्ति से एकदम सही रूप में तत्त्वनिर्णय हो जाने के बाद अनुभव से प्रमाणित करने की बात आती है, आत्मानुभव होता है। सम्यग्दर्शन या सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को प्राप्त करने की यही प्रक्रिया है, एकमात्र यही विधि है।

यहाँ यह भी विशेष ध्यान रखने की बात है कि तत्त्वसंबंधी विषयों का अध्ययन, श्रवण, चिन्तन, मनन तो बुद्धिपूर्वक करने की चीज है और अनुभव तो भगवान आत्मा का सही स्वरूप समझ में आ जाने के बाद, उसमें अपनेपन के भाव का अति तीव्र होने से अपने आप होने की चीज है; क्योंकि **अनुभव करने के विकल्पों से अनुभव नहीं होता; अपितु इन विकल्पों से पार हो जाने के बाद ही अनुभव होता है।**

अब पण्डितजी इसी बात को प्रश्नोत्तरों के माध्यम से आगे बढ़ाते हुए वस्तुस्थिति स्पष्ट करते हैं –

''यहाँ फिर प्रश्न – यदि सविकल्प-निर्विकल्प में जानने का विशेष नहीं है तो अधिक आनन्द कैसे होता है ?

उसका समाधान – सविकल्प दशा में ज्ञान अनेक ज्ञेयों को जाननेरूप प्रवर्त्तता था, निर्विकल्पदशा में केवल आत्मा का ही जानना है; एक तो यह विशेषता है।

दूसरी विशेषता यह है कि जो परिणाम नाना विकल्पों में परिणमित होता था, वह केवल स्वरूप ही से तादात्म्यरूप होकर प्रवृत्त हुआ; दूसरी यह विशेषता हुई।

ऐसी विशेषताएँ होने पर कोई वचनातीत ऐसा अपूर्व आनन्द होता है जो कि विषय सेवन में उसकी जाति का अंश भी नहीं है, इसलिए उस आनन्द को अतीन्द्रिय कहते हैं।[१]''

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी उक्त कथन के भाव को इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''धर्मी जीव सविकल्पदशा के समय में आत्मा का स्वरूप जैसा जानता था, निर्विकल्पदशा के समय में भी वैसा ही जानता है, निर्विकल्प दशा में कोई विशेष प्रकार जाना – ऐसी विशेषता नहीं है, फिर भी सविकल्प से निर्विकल्पदशा की बहुत महिमा की गई है – इसका कारण क्या ? इसमें ऐसी कौनसी विशेषता है कि स्वानुभव की इतनी भारी महिमा शास्त्रों ने गायी है ? यह बात यहाँ दिखाना है।[२]

यद्यपि जितनी वीतरागता हुई है, उतना आत्मिक सुख तो सविकल्प दशा के समय में भी धर्मी को वर्त रहा है; तथापि निर्विकल्पदशा के समय में उपयोग निजस्वरूप में तन्मय होकर जिस अतीन्द्रिय परम आनन्द का वेदन करता है, उसकी कोई खास विशेषता है। अहा ! स्वानुभव का आनन्द क्या चीज है, इसकी अज्ञानी को कल्पना भी नहीं आ सकती। जिसने अतीन्द्रिय चैतन्य को कभी देखा नहीं, जिसने इन्द्रिय-विषयों में ही आनन्द मान रखा है, उसको स्वानुभव के अतीन्द्रिय आनन्द का आभास भी कहाँ से हो सकता है ?

अरे, ऐसे स्वानुभव के आनन्द की चर्चा भी जीव को दुर्लभ है। जिसने अपने ज्ञान को बाह्य-इन्द्रियविषयों में ही भ्रमाया है, कभी ज्ञानी को अन्तर्मुख करके अतीन्द्रिय वस्तु को लक्षगत नहीं किया है, उसे उस अतीन्द्रिय वस्तु के अतीन्द्रिय सुख का अनुमान भी नहीं हो सकता।[३]

शंका – हम तो गृहस्थ हैं; गृहस्थ को ऐसी स्वानुभव की बात कैसे समझ में आये ?

समाधान – भाई ! स्वानुभव की यह चिट्ठी लिखनेवाले खुद भी गृहस्थ ही थे और जिनके लिए यह चिट्ठी लिखी गई है, वे भी गृहस्थ ही थे; अत: गृहस्थों को समझ में आये, ऐसी यह बात है।[४]

सम्यग्दर्शन होने के बाद धर्मी का उपयोग कभी स्व में रहता है, कभी पर में रहता है; सततरूप में स्व में उपयोग नहीं रहता; परन्तु सम्यक्त्व तो सततरूप से रहता है। वह सम्यक्त्व स्व-उपयोग के समय प्रत्यक्ष व पर-उपयोग के समय परोक्ष – ऐसा भेद नहीं है अथवा वह सम्यक्त्व

१. रहस्यपूर्णचिट्ठी : मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३४६
२. अध्यात्मसंदेश, पृष्ठ ८८ ३. वही, पृष्ठ ८९ ४. वही, पृष्ठ ८९-९०

स्वानुभव के वक्त उपयोगरूप व परलक्ष के वक्त लब्धिरूप – ऐसा भेद भी सम्यक्त्व में नहीं है। सम्यक्त्व में तो औपशमिकादि प्रकार हैं और वे तीनों ही प्रकार सविकल्पदशा के समय में भी होते हैं। **सम्यग्दर्शन होने से जितनी शुद्ध परिणति हुई, वह तो शुभ-अशुभ के काल में भी धर्मी को चल ही रही है।**

सम्यग्दर्शन हुआ, तब से वह जीव सदैव निर्विकल्प-अनुभूति में ही रहा करे–ऐसा नहीं है। उसको शुद्धात्मप्रतीति सदैव रहती है, परंतु अनुभूति तो कभी किसी समय होती है। मुनि को भी निर्विकल्प अनुभूति सतत नहीं रहती; यदि सतत दो घड़ी तक निर्विकल्प रहें तो केवलज्ञान हो जाये।[१]''

पूर्व प्रकरण की समाप्ति पर पण्डितजी ने एक बात की ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया था कि अनुभव के काल में ज्ञान की विशेष वृद्धि नहीं होती। जिन लोगों के चित्त में यह बात पहले से ही खचित है कि कुछ विशेष जानने से विशेष आनन्द होता है; उन्हें ऐसा प्रश्न होना स्वाभाविक ही है कि **जब सविकल्पदशा से निर्विकल्पदशा में विशेष ज्ञान नहीं होता तो आनन्द भी विशेष कैसे होगा ?**

उक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए पण्डितजी सविकल्पज्ञान से निर्विकल्पज्ञान में होनेवाली दो विशेषताओं का विशेष उल्लेख करते हैं –

१. सविकल्पदशा में ज्ञान अनेक ज्ञेयों को जानता रहता है, पर निर्विकल्पदशा में मुख्यरूप से एकमात्र आत्मा का ही जानना होता है।

२. सविकल्पदशा में परिणाम अनेक विकल्पों में उलझे रहते हैं और निर्विकल्पदशा में मात्र आत्मस्वरूप में ही तादात्म्यरूप से परिणमित होते हैं।

उक्त विशेषताओं के कारण निर्विकल्प अनुभूति के काल में विषय सेवन के सुख से एकदम भिन्न जाति का विशेष अतीन्द्रिय आनंद आता है। •

१. अध्यात्मसंदेश, पृष्ठ ९०-९१

मुक्त विद्यापीठ के परीक्षार्थी ध्यान दें

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ जयपुर की द्विवर्षीय विशारद एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद के सैकेण्ड सेमेस्टर की परीक्षायें दिसम्बर 2012 में सम्पन्न हो चुकी है।

जिन परीक्षार्थियों ने अभी तक भी उत्तर पुस्तिकायें नहीं भेजी हों, कृपया वे अपनी उत्तर पुस्तिकायें तत्काल भेज देवें।

– ओ.पी. आचार्य (प्रबंधक-परीक्षा विभाग)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 24 फरवरी	जयपुर	वार्षिकोत्सव
22 से 25 मार्च	अलवर	विधान
26 व 27 मार्च	कोटा(मुमुक्षु आश्रम)	अष्टाह्निका

(पृष्ठ 5 का शेष ...)

न्याय, मुमुक्षु की पात्रता, दृष्टि का विषय, ध्यान : एक अनुशीलन, पूज्य गुरुदेवश्री एवं उनका तत्त्वज्ञान आदि अनेक विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत मंगलार्थी छात्रों द्वारा 'ज्ञानगोष्ठी', डी.पी.एस. की बालिकाओं द्वारा 'मातादेवी चर्चा', मंगलार्थी छात्रों द्वारा भगवान महावीर के पाँच नामों की सुन्दर नाटिका, राजाओं द्वारा 'तपकल्याणक सभा', उज्जैन मुमुक्षु मण्डल द्वारा 'करो सिद्धों से टेलिफोन' आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इसके अतिरिक्त मंगलार्थी प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मंगलार्थी छात्रों द्वारा वर्षभर में किये गये उल्लेखनीय कार्यों हेतु प्रशस्ति-पत्र एवं पारितोषिक देकर उनका सम्मान किया गया।

महोत्सव के अवसर पर ही मंगलायतन विश्वविद्यालय की ओर से घोषणा की गई कि मंगलायतन विश्वविद्यालय दर्शन विज्ञान केन्द्र के माध्यम से जैनदर्शन के विविध पाठ्यक्रम संचालित करेगा। डॉ. जयन्तीलाल जैन ने सभी पाठ्यक्रमों की रूपरेखा से जनसमुदाय को अवगत कराया। इसके अतिरिक्त पण्डित कैलाशचन्द्रजी की पुण्य स्मृति में उनके परिवारजनों द्वारा **पण्डित कैलाशचन्द्र जैन फाउण्डेशन** की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य पण्डितजी द्वारा लिखित साहित्य का प्रकाशन एवं उपलब्धता के साथ साथ अन्य विशिष्ट सत्साहित्य का प्रकाशन है। महोत्सव में श्री शुभचन्द्राचार्य विरचित परमाध्यात्म तरंगिणी तथा भट्टारक श्री ज्ञानभूषण द्वारा रचित तत्त्वज्ञान तरंगिणी नामक ग्रन्थों का विमोचन किया गया।

इस अवसर पर श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का भी आयोजन किया गया। अन्तिम दिन आदिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में लगभग 25 हजार रूपये का सत्साहित्य जन-जन तक पहुँचा।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में मंगलार्थी छात्रों के सहयोग से संपन्न हुये।

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127